बच्चों को बाइबल अध्ययन करना सिखाएं तथा शैतान का सामना करने के लिये बाइबल का प्रयोग यीशु की भांति करें ।

ऐसी गतिविधियों को चुनें जो बच्चों की आवश्यकताओं तथा उनकी आयु के अनुकूल हों

प्रार्थना : "प्रिय प्रभु हमारे बाइबल अध्ययन को बच्चों के लिये सरल बनाईये ताकि वे आपके वचन का पालन कर सकें और अपने मार्ग के लिये उजियाले के रूप में वचनों को उपयोग में लाएं ।"

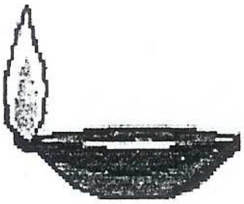

प्राचीन-कालीन तेल का दीपक

मिट्टी-तेल की आधुनिक लालटेन

मत्ती 4:1-11 पढ़कर प्रभु यीशु की परीक्षा का वृतान्त सिखाने की तैयारी कीजिये। इस पाठ्यांश में हम पढ़ते हैं कि हमें किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हुए शैतान को जवाब देना चाहिये? यीशु ने किस प्रकार शैतान का सामना किया, यह बताने के लिये किसी बड़ी आयु के बच्चे को तैयार करें ताकि वह पढ़ने या मुखाग्र रूप से सुनाने के द्वारा यह वृतान्त प्रस्तुत करे।

तत्पश्चात् ये प्रश्न कीजिए :(उत्तर कोष्ठक में दिए गये हैं)

- यीशु क्यों बहुत भूखा था? (देखें पद 2)
- शैतान ने किन तीन बातों में यीशु की परीक्षा की? (देखें पद 3,6,9)
- प्रत्येक परीक्षा का यीशु ने किस प्रकार उत्तर दिया?(पवित्रशास्त्र उपयोग द्वारा- देखें पद 4,7,10)
- क्या यीशु को पवित्रशास्त्र कंठस्थ था? (हां, कंठस्थ था)
- हमें परीक्षाओं में व निर्णय लेने में किस प्रकार तैयारी करना चाहिये? हृदय से यीशु के आदर्श पर चलना चाहिये, उन्होंने प्रार्थना व उपवास में समय व्यतीत किया और जीवन भर सावधानी से वचन को पूरा किया

लोगों को समझाएं कि शैतान आज भी इन तीन बातों द्वारा परीक्षा करता है।

- पहली परीक्षा करते हुए शैतान ने कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं? शैतान परीक्षा में डालता है कि हम शरीरिक चिन्ताओं में पड़ जाएं। यीशु सिखाते हैं कि शरीरिक चिन्ताओं में पड़ने से परमेश्वर की इच्छा का पालन करना व परमेश्वर पर भरोसा करना श्रेष्ठ होता है।
- दूसरी बार परीक्षा करते हुए मंदिर के कंगूरे से शैतान ने यीशु से कहा कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को नीचे गिरा दे। इस प्रकार बहुतेरे लोग उसके आश्चर्यकर्म व सामर्थ की प्रसंशा करेंगे। शैतान हमें उभारता है कि हम लोगों को प्रभावित करें और ऐसे काम करें कि हम पसन्द किये जाएं चाहे हमारे कार्य गलत ही क्यों न हों, वे हमारा अनुकरण करें। पवित्रशास्त्र सिखाता है कि हमारे जीवन में सर्वोत्तम स्थान परमेश्वर ही को देना चाहिये, उसकी आराधना करने में जो बाधाएं आएं उन्हें दूर कर देना चाहिये।
- शैतान की तीसरी परीक्षा समस्त संसार पर राज्य करने से संबंधित थी । शैतान हमें परीक्षा में डालता है कि हम अपने स्वार्थपूर्ण उददेश्यों के लिये अपने अधिकार व शक्ति का उपयोग करें। पवित्रशास्त्र सिखाता है कि हमें परमेश्वर की सेवा करना चाहिये, न कि स्वयं परमेश्वर से और दूसरे लोगों से अपनी सेवा कराना चाहिये।

समझााईए कि हम मसीहीयों को यीशु की तरह इन परीक्षाओं का सामना करना चाहिये और पवित्रशास्त्र से प्रमाण देना चाहिये। जिस प्रकार प्रभु यीशु को पवित्रशास्त्र का ज्ञान था, हमें भी होना चाहिये ताकि हम शैतान का सामना कर सकें।

यीशु द्वारा शैतान का सामना करने की इस कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत कीजिए ।

- कलिसिया के प्रधान अगुवे के सहयोग से नाटक प्रस्तुत करने की योजना बनाएं।
- जब तैयारियां हो रही हों तो बड़े बच्चे छोटे बच्चों की सहायता करें।
- समझदार बच्चों में से कोई यीशु, शैतान या उद्‌घोषक की भूमिका करें। उद्‌घोषक कहानी का सारांश प्रस्तुत करे व बच्चों की सहायता करे व स्मरण कराये कि उन्हें क्या कहना या करना है।
- छोटे बच्चे कागजों के बने मुकुट पहनकर राजाओं की तथा कागज़ के बने पंख लगाकर स्वर्गदूतों की भूमिका करें या अपने हाथ फैलाकर रखें मानों अपने पंख फैला रखे हों।

उद्‌घोषक: मत्ती 4:1-11 के आधार पर कहानी सुनाए या पढ़े, और कहे, यीशु ने इस प्रकार प्रार्थना की:

यीशु: हे पिता, मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि मैं आपके साथ बातचीत में चालीस दिन व्यतीत कर पाया, और उस कार्य के लिये स्वयं को तैयार कर पाया जो आपने मेरे लिये रखे हैं, अब मुझे भूख लग रही है।

शैतान: परमेश्वर के पुत्र, सुनो, आपको भूखा रहने की आवश्यकता नहीं, क्यों प्रतीक्षा करते हो कि परमेश्वर तुम्हें कुछ दे, इन पत्थरों को रोटी बना दो।

यीशु: नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा, परमेश्वर का कथन है कि मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित नहीं रहता, मुझे जीवित रहने के लिये परमेश्वर के वचनों की आवश्यकता है।

शैतान: यीशु को किसी कुर्सी पर खड़ा कीजिये, और कहें, तुम मंदिर के कंगूरे पर खड़े हो ज़रा नीचे दृष्टि डालो, और स्वयं को नीचे गिरा दो और परमेश्वर को अपनी प्रतिज्ञा पूरा करने का अवसर दो जैसा उसने कहा है कि वह तुम्हें बचाएगा।

यीशु: नहीं, मैं परमेश्वर को ऐसा करने के लिये दबाव नहीं डालूंगा, मैं केवल उसकी सेवा करूंगा और जो काम उसने दिये हैं वही करूंगा क्योंकि पवित्रशास्त्र का लेख है कि तू अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।

शैतान: राजाओं की ओर संकेत करते हुए कहता है, उन सब राजाओं की ओर देखो, तुम उन सब पर शासन कर सकते हो, तुम्हें केवल यही करना है कि मेरी सेवा करो और परमेश्वर को भूल जाओ। इस प्रकार तुम सबसे शक्तिशाली राजा बन सकते हो।

राजा लोग: सब राजा शैतान के चारों ओर खड़े हो जाते हैं और उसकी उपासना करते हैं, और कहते हैं, स्वामी हमें सामर्थ दो।

यीशु : जब तक राजा चले नहीं जाते वे इन्तजार करते हैं और जब सब राजा चले जाते हैं तब शैतान को धक्का देते हुए कहते हैं कि हे शैतान दूर हो जा, पवित्रशास्त्र का वचन है कि तू केवल परमेश्वर ही की उपासना कर, मैं कभी भी ऐसा कोई धार्मिक कार्य नहीं करूंगा कि लोग मुझे पसन्द करें और मेरा अनुकरण करें।

शैतान: शैतान वहां से यह कहते हुए चला जाता है कि मैं जा रहा हूं।

स्वर्गदूत: जो बच्चे स्वर्गदूत बने हों, वे यीशु के पास जाएं और कहें, तेरे पिता ने हमें तेरी सेवा के लिये भेजा है।

प्रश्न: जबकि नाटक समाप्त हो जाए तो जो प्रश्न आरम्भ में दिए गये हैं वे पूछे जा सकते हैं

गतिविधि: बाइबल की पुस्तकों के नाम याद कीजिये यदि संभव हो तो उन्हें गाएं।

ऐसे व्यक्ति का चित्र बनाएं जो हाथ में दीपक थामें हो और मार्ग पर चल रहा हो।

- बच्चों को वह चित्र बनाने के लिये कहें और मार्ग में संकट भी चित्रित कराएं जैसे आंधी-तुफान, अग्नि, विचित्र प्राणी, ढलानी चटटानें आदि।

- उन चित्रों को आराधना समय में दिखाया जाए तथा बताया जाए कि किस प्रकार बाइबल हमारे मार्ग के लिये दीपक है जो मार्ग की परीक्षाओं व विपत्तियों में हमारा मार्गदर्शक है।

  साथ ही अन्य उदाहरण लेकर समझाईए और विचार–विमर्श किजिए कि किस प्रकार परमेश्वर अपने वचनों के द्वारा परीक्षाओं व बुराईयों में हमारी सहायता करता है। बच्चों को विभिन्न उदाहरण देने दीजिए।

- प्रश्न कीजिये कि पवित्रशास्त्र के किस वचन ने बच्चों को बुराइ दूर करने में सहायता की।

कविता अथवा गीतः भजनसंहिता 119:97, 103, 105, 111, व 112 आदि पर आधरित पद लेकर कविता या गीत सुनाने या इन पदों को याद करने को कहें।

बड़े बच्चे मत्ती 4:4 से शब्द लेकर कविता या गीत बनाकर प्रस्तुत करें।

साथ ही 2 तीमुथियुस 2:15 याद करें।

प्रार्थनाः हे पिता, आपके वचन हमारे लिये अमूल्य धन हैं, आपकी आत्मा हमारे मन की रक्षा करे ताकि हम बुराईयों और परीक्षाओं से बच सकें।